हिमालयीन ध्यानयोग

संपादक : ऋषभ | **लेखकमंडल :** श्री अंबरीशजी, जुगल, विक्रम, विपिन, सागर, अभिजित, यश, कोमल, ईशा, हेमांगिनी, दर्शना, मीनल | **डिझाइन** : मयूर

प्रगतिपत्र | मार्च 2024

निर्माणाधीन श्री गुरुशक्तिधाम, गुजरात समर्पण आश्रम - महुडी

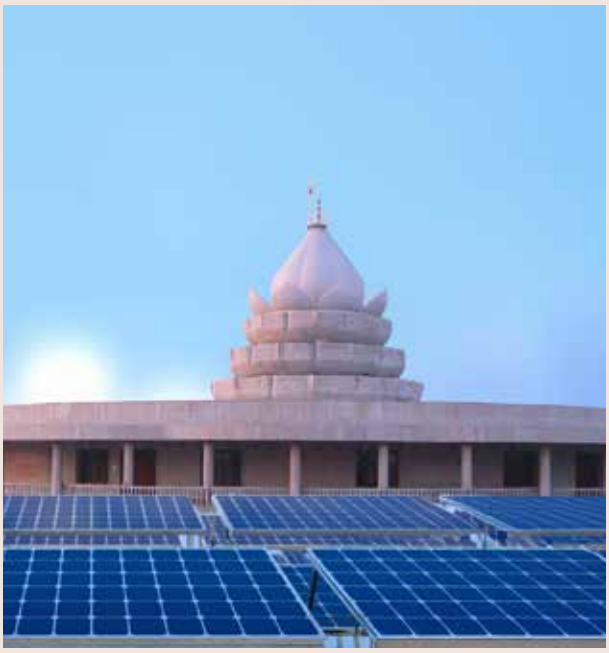

समर्पण आश्रमों में सौर परियोजना

आत्मनिर्भर आश्रम की ओर एक कदम...

आज हमें हमारे सभी आश्रमों से जुड़ने का और उनके दीर्घकालीन प्रगति में अपना योगदान देने का एक स्वर्णिम अवसर प्राप्त हो रहा है – सोलार प्रोजेक्ट के माध्यम से! आत्मनिर्भर आश्रम की ओर प्रथम कदम है विद्युत के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता। आश्रम में प्रति माह जो खर्च होता है उसमें से एक तिहाई तो बिजली का ही होता है। इस खर्च से उभरने के लिए भारतभर के सभी आश्रमों में एक साथ सौर परियोजना डालने का मुहिम इस महाशिवरात्रि – 2024 से शुरू हो गया है। जिसमें दुनियाभर के साधक अनुदान से जुड़ रहे हैं।

अनुष्ठान की गलियारी से

समर्पण आश्रम दांडी में 45 दिवसीय गहन ध्यान अभ्यास के लिए कई लोग आए थे। जिनमें से कुछ श्री गुरुप्रसादभवन में रहते थे और कुछ गुरुग्राम में रहते थे। इस ध्यानसाधना की शुरुआत से पहले हमने लोगों के दो समूहों को देखा। एक समूह खुश था क्योंकि यह पहला ध्यान साधना था जो ध्यान के समग्र अनुभव को बढ़ाएगा और उन्होंने सूक्ष्म शरीर से जुड़ने का मौका देने के लिए परम पूज्य स्वामीजी को लगातार धन्यवाद दिया। जैसा कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, दूसरी तरफ, लोग अपने भाग्य को कोस रहे थे, क्योंकि परम पूज्य स्वामीजी भौतिक रूप में नहीं, प्रत्यक्ष या स्थूल रूप में थे और इस 45-दिवसीय गहन ध्यान साधनाकी उपयोगिता पर सवाल उठा रहे थे।

जैसे ही 24 जनवरी, 2024 से गहन ध्यान अनुष्ठान की शुरुआत हो गई, दूसरे पक्ष के लोग जो शुरू में ध्यान साधना से खुश नहीं थे, उन्हें ऐसे अनुभव प्राप्त हुए जिससे उन्हें नाखुशी की मानसिकता को छोड़ने और ध्यान के जरिए आत्मा के आनंद में पूरा डूबकर, गहन ध्यान का पूरा आनंद लेने के लिए तैयार होना पड़ा। इसका दूसरे पक्ष पर इतना प्रभाव पड़ा कि सिक्के के दोनों पहलू एक जैसे हो गए और सभी साधक भरपूर आनंद ले रहे थे।

इस साधनाके दौरान, सभी साधक प्रतिदिन एक ही बात पर बार-बार चर्चा करते देखे गए वो थी श्री अंबरीशजी की गुरुतत्त्व सभा। निसंदेह! इस सभा के पास गहरा ज्ञान और अनुभव था। यह आम तौर पर गुरुवार और रविवार को छोड़कर हर दिन रात्रि 08:30 बजे रात्रि भोजन के बाद गुरुग्राम के एम्फीथिएटर में आयोजित की जाती थी। यह आमतौर पर रात 09:30 बजे तक चलती थी, लेकिन कभी-कभी इसे रात 10:00 बजे तक बढ़ा दिया जाता था।

प्रत्येक दिन सुबह नाश्ते के दौरान सभी समूह पिछली रात गुरुतत्त्व सभा में श्री अंबरीशजी द्वारा साझा किए गए विषय और अनुभवों पर चर्चा करते देखे गए। साधकों द्वारा उठाए गए प्रश्नों के उनके द्वारा दिए गए त्वरित उत्तर पूरी तरह से असाधारण थे। इसने विषय के बिल्कुल नए आयाम खोल दिए और प्रत्येक साधक को इस पर बार-बार सोचने के लिए मजबूर किया। इसके कारण, साधक आध्यात्मिक विषयों पर विचार करने में व्यस्त थे और इस तरह बाहरी दुनिया के बारे में भूल गए।

प्रिय मित्रों,

एक पुत्र जब पैदा होता है तो उसको माँ का असीम प्रेम मिलने के कारण सहजता से धारणा बांध लेता है कि जैसे उसकी माँ ने उसको प्रेम दिया उसको वैसा ही प्रेम सभी स्त्रियों से प्राप्त होगा क्योंकि उसने जीवन में सबसे पहले और सबसे गहन प्रेम अपनी माँ के माध्यम से अनुभव किया होता है।

पुत्र बड़ा होता है और विवाह करता है तत्पश्चात् पाता है कि जिस स्त्री से उसने प्रेम किया वह उसे उतना प्रेम अनुभव कराने में असमर्थ है, जितना प्रेम उसकी माँ के माध्यम से उसे अनुभव हुआ। फिर वह देखता है कि वही पत्नी उसके बच्चों को, वैसा ही प्रेम दे रही है, जैसा प्रेम उसकी माँ ने उसे दिया, लेकिन वही प्रेम वह पत्नी उसे नहीं दे पाती।

बच्चे से लेकर पति बनने की यात्रा में एक पुरुष की प्रेम की व्याख्याएँ बदलती रहती हैं और उससे जब वह प्रेम अनुभव नहीं होता, फिर उसमें तामसी वृत्ति जन्म लेती है। उसे प्रेम मिले नहीं तो अब वह उस प्रेम को छीनने के लिए अपनी दृष्टि, अपना चित्त, अपना बल और अपने विचार सब कुछ मलिन कर लेता है, ताकि उसे उस पाप से वह प्रेम का क्षणिक ही क्यों ना हो, सुख मिले।

जब वही पुरुष ध्यान साधना से जुड़ता है, तब उसे एहसास होता है, जिस प्रेम को, कुंवारेंपन को, अबोधिता को, सौंदर्य को वह अपने बल से, अपने चित्त से, अपनी कुदृष्टि से, अपने मलिन विचारों से छीनने का आनंद लेना चाहता था; वह संपूर्ण प्रेम, सौंदर्य, कुंवारापन और अबोधिता की संपदा उस स्त्री ने कभी किसी भी पुरुष के लिए रखी ही नहीं थी, वह सौंदर्य और आकर्षण हमेशा से उस स्त्री ने जाने-अनजाने में क्यों ना हो, उसकी होने वाली संतान के लिए ही संजोये रखा था।

स्त्री से अनुभव होने वाला सारा ही आकर्षण उसकी माँ बनने के बाद उसकी संतान के लिए ही प्राकृतिक रूप से संजोया हुआ होता है।

दूसरी ओर पुरुष हिंसा यानी जबरदस्ती या जख़्म और मृत्यु देने वाली घटना को ही मानते हैं लेकिन चित्त, वाणी और विचार से किया कृत्य तो इससे भी बुरी हिंसा की श्रेणी में आते हैं। क्योंकि पुरुष उस स्त्री के माध्यम से हुए सौंदर्य के अनुभव पर कुदृष्टि डालकर वह उससे आने वाली संतानों के स्नेहप्राप्ति के अधिकारों पर अन्याय और हिंसा कर रहे होते हैं। जिस कारण आने वाली पीढ़ी भी उसी प्रेमविहीन माँ से जन्म लेती है और हम अपनी युवा पीढ़ी को कोसते हैं।

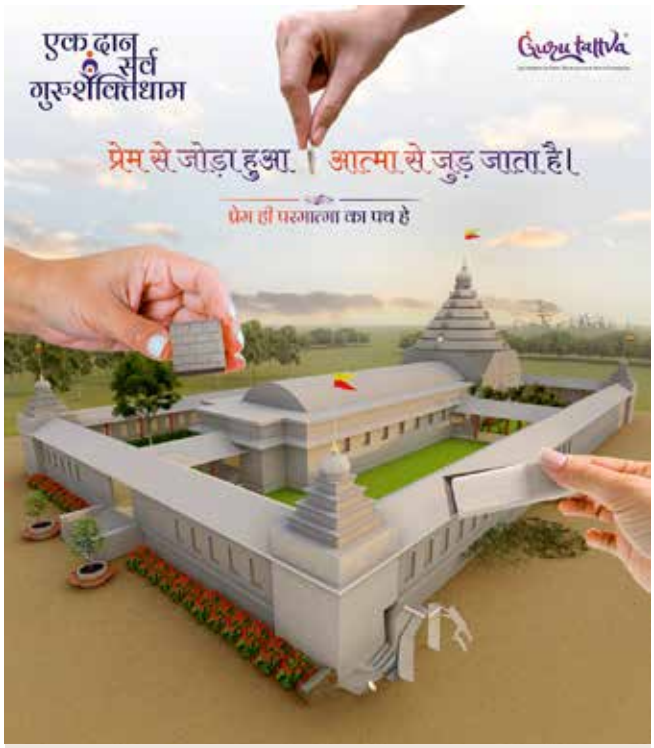

एक दान सर्व श्री गुरुशक्तिधाम एक योजना

दिनांक 22 जुलाई, 2022 से लागू

क्या आप श्री गुरुशक्तिधाम से जुड़े? श्री गुरुशक्तिधाम से जुड़ने का मौका मत चुकीए। सकारात्मक ऊर्जा-गुरुशक्तियों से परिपूर्ण श्री गुरुशक्तिधाम के निर्माण के साथ जुड़ना यानी आध्यात्मिक बचत करना, अपने चित्त को विकसित करने का अवसर देना।

आप नीचे दी गई राशि से इस निर्माणकार्य में जुड़ सकते हैं :
811 ₹/ प्रति माह
2025 ₹/ प्रति माह
81,125 ₹/ प्रति माह

ऑनलाइन अनुदान से या अपने शहर/गाँव के आचार्य/संचालक को राशि देकर भी जुड़ सकते हैं।
आईए, हम साथ मिलकर श्री गुरुशक्तिधाम के निर्माणकार्य को 8-11-2025 तक पूर्ण करने में सहयोग देते हैं।

समर्पण आश्रम

बहुरत्ना भारतीय संस्कृति की मानव-समाज को मिली अनेकों भेट में से एक है आश्रम व्यवस्था। आश्रम यानी एक ऐसा आध्यात्मिक स्थान जिसके द्वार आध्यात्मिक उन्नति पाने, जीवन की भागदौड़ से दूर कुछ समय प्रकृति के सान्निध्य में व्यतीत करने तथा जीवन में एक नया प्राण डालने हेतु मनुष्य मात्र के लिए खुले हो; एक ऐसी भूमि जिसका चयन चैतन्य के ज्ञाता साक्षात सद्गुरुदेव द्वारा हुआ हो और अपने तपोबल से उस भूमि को भी चैतन्य से परिपूर्ण की गई हो!

यह हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है कि वैचारिक प्रदूषण से सम्पूर्ण मुक्त और हमें अपने आत्मा की ओर ले जाने में सहायक वातावरण देनेवाली अनेकों भूमियों का चयन विश्व स्तर पर हिमालय के महर्षि श्री शिवकृपानंद स्वामीजी द्वारा हुआ और जिसका फलित है समर्पण आश्रम!

प्रत्येक समर्पण आश्रम की नैसर्गिक रमणीयता, नीरव शांति और यहाँ बहता हुआ चैतन्य तन, मन और आत्मा तीनों को सुकून पहुँचाते हैं। यहाँ सुबह-शाम चलती यज्ञशाला में होता मंत्रगान हमें मंत्रमुग्ध करता है और अपने भूतकाल को अग्नि के हवाले करते हुए वर्तमान में जीने की प्रेरणा भी देता है। गौशाला में भेंट देना तो गौमाताओं के नि:स्वार्थ प्रेम से प्रचिति पाने का दुर्लभ अवसर होता है। यहाँ बसा गुरुग्राम या निवास व्यवस्था एकांत में ध्यानसाधना के लिए साधकों को बरबस आकर्षित करता है, साथ में आश्रम में आध्यात्मिक पुस्तकालय, प्रदर्शनी खंड, थिएटर जैसे कुछ अन्य आकर्षण भी हैं। इन प्रत्येक आकर्षण से भी परे, सर्वोत्तम वास्तु है श्री गुरुशक्तिधाम!

श्री गुरुशक्तिधाम एक ऐसा आध्यात्मिक स्थान है:

- जहाँ हिमालय के महर्षि श्री शिवकृपानंद स्वामीजी द्वारा गहन ध्यान अनुष्ठान के दौरान प्राण-प्रतिष्ठित श्री मंगलमूर्ति बिराजमान हैं।
- जहाँ मनुष्यमात्र के लिए आध्यात्मिक सजीव अनुभूति – आत्मसाक्षात्कार की अनुभूति संभव है।
- जहाँ भावी पीढ़ी हेतु आध्यात्मिक ज्ञान की विरासत को सँजोया जा रहा है!

श्री गुरुशक्तिधाम एक आध्यात्मिक आविष्कार

श्री गुरुशक्तिधाम यानी जहाँ गुरुशक्तियाँ साक्षात् बिराजमान हो ऐसा धाम!

परमात्मा की शक्तियों के वाहक होते हैं गुरु, जिन्होंने अपने ज्ञानबल से, तपोबल से अपने शरीरभाव को पूर्णत: रिक्त कर लिया हो, ऐसे योगारूढ़ गुरुदेव द्वारा अपनी प्रतिकृति में अपने ही प्राण गहन ध्यान साधना से पूरना और फिर तैयार होता है एक आध्यात्मिक आविष्कार – जो गुरुसत्ता का ही साकार रूप होता है, उनके समकक्ष और उनके तुल्य! ये श्री मंगलमूर्तियाँ जहाँ बिराजमान होती है, वह है श्री गुरुशक्तिधाम!

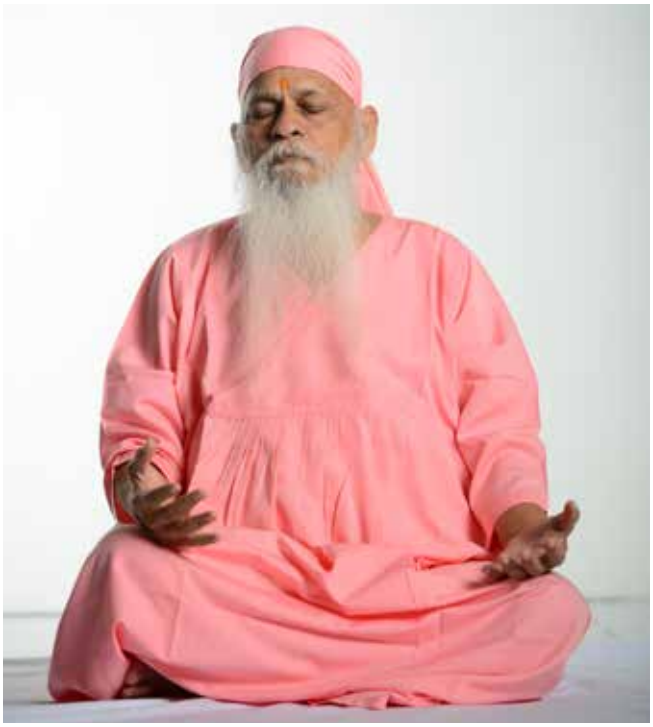

श्री गुरुशक्तिधाम में स्थित श्री मंगलमूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा में संकल्प:

प्राण प्रतिष्ठा का अर्थ है मूर्ति में चैतन्य की स्थापना। आध्यात्मिक रूप से उन्नत महात्मा ही यह प्रक्रिया कर सकते हैं, क्योंकि वे उच्च कोटी के चैतन्य के स्रोत से जुड़े हुए होते हैं। जब भी कोई प्राण प्रतिष्ठा करते हैं, तो प्राण प्रतिष्ठा करते समय समाज में जिस चीज की कमी है, जिस चीज की आवश्यकता है, वो उसमें संकल्प के साथ स्थापित करते हैं। श्री गुरुशक्तिधाम की प्रत्येक श्री मंगलमूर्ति में चेतना स्थापित करते समय पूज्य गुरुदेव द्वारा यह संकल्प किया गया कि प्रत्येक मूर्ति आनेवाले प्रत्येक साधक को आत्मानुभूति कराए!

शरीर से आत्मा तक ले जानेवाली प्रक्रिया दर्शन से संभव हो सकती है, परंतु ताली दो हाथों से बजती है। उस स्थापित चैतन्य को हम कितना ग्रहण कर पाते हैं, यह उस बात पर निर्भर है कि हम उसके सामने किस स्वरूप में जाते हैं। अगर हम श्री गुरुशक्तिधाम में श्री मंगलमूर्ति के सामने देह के स्तर पर जाते हैं, देह की समस्या, देह के तनाव, देह के रोग, देह के व्यसन लेकर जाते हैं तो हमें जो प्राप्त होगा, वह देह के स्तर पर ही होगा। लेकिन अगर हम अपने-आप को संतुलित करके, अपने-आप को एक आत्मा समझ करके श्री गुरुशक्तिधाम में जाते हैं तो वहाँ की ऊर्जा, वहाँ की शक्ति ग्रहण कर सकते हैं और हमें आत्मानंद की अनुभूति हो सकती है।

आत्मसाक्षात्कार से बड़ा कोई समाजकार्य नहीं है।
- श्री शिवकृपानंद स्वामीजी

ऐसे श्री गुरुशक्तिधाम का निर्माण, इनके दर्शन और इनका सान्निध्य हमें एक आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करता है, क्योंकि साक्षात गुरुशक्तियों की सामूहिकता से हमारा जुड़ाव हो जाता है!

श्री गुरुशक्तिधाम का निर्माण कार्य:

विश्वभर के सभी खंडों के लिए तथा विभिन्न स्थानों पर स्थापित होने हेतु परम पूज्य श्री शिवकृपानंद स्वामीजी द्वारा कुल १६ मूर्तियाँ प्राण-प्रतिष्ठित हुई हैं।

श्री गुरुशक्तिधाम का बांधकाम वास्तव में तो गुरुशक्तियों की स्थापना ही है और जहाँ सामूहिकता होती है, वहाँ गुरुशक्तियाँ होती ही हैं। इसलिए हमें धनसंग्रह के लिए भी सामूहिकता में प्रयास करना चाहिए। प्रत्येक साधक का योगदान प्रत्येक श्री गुरुशक्तिधाम के निर्माण कार्य में होना चाहिए। ऐसा विशाल दृष्टिकोण लेकर एक संकल्पधारी योजना प्रारंभ की जा रही है।
– परम पूज्य श्री शिवकृपानंद स्वामीजी

गहन ध्यान अनुष्ठान समापन समारोह, महाशिवरात्रि – 2024

पूर्वतैयारी :

- गहन ध्यान अनुष्ठान के दौरान एक माह पूर्व से ही तैयारियाँ शुरू हो गई थी।
- अनुभव + शक्ति इस न्याय के साथ 32 समिति जो बनी थी, प्रत्येक में दो अध्यक्ष थे - एक अनुभवी और एक युवा।
- डिजिटल प्रचार के साथ-साथ पदाधिकारियों और साधकों द्वारा स्वयंभू प्रचार शुरू हुआ।
- 1600 स्वयंसेवक इस कार्य को सफल बनाने में कार्यक्रम के कुछ दिन पूर्व से ही आश्रम में आकर जुट गए।
- ऑनलाइन पार्किंग से लेकर जितनी भी व्यवस्थाएँ थीं, उन सभी के छोटे-छोटे वीडियो सभी की जानकारी हेतु एक सप्ताह पूर्व से ही सोशयल मीडिया द्वारा भेजना शुरू हो गया था।

8 मार्च, महाशिवरात्रि का दिन त्रिवेणी संगम :

- हिमालय के महर्षि परम पूज्य श्री शिवकृपानंद स्वामीजी द्वारा प्रति वर्ष 45 दिवसीय गहन ध्यान अनुष्ठान का समापन ।
- हिमालयन ध्यानयोग संस्कार को समाज में आकर 30 वर्ष पूर्ण हुए।
- महिला दिवस; उल्लेखनीय है कि विश्वभर में फैले समर्पण परिवार में सभी स्त्रियों को स्त्रीशक्ति माना जाता है।

आखिर वो पावन दिन आ गया:

- पूज्य गुरुदेव की चैतन्य गंगा में स्नान करने के लिए साधकजन सुबह से ही आश्रम में आने लगे।
- पंडाल से लेकर पंजीकरण, स्वागत, जलप्रबंधन, भोजन प्रबंधन, दान, साहित्य, श्री गुरुशक्तिधाम दर्शन, बैठक व्यवस्था, फ़ोटोग्राफी, वीडियोग्राफी, ऑनलाइन प्रसारण, गणमान्य महेमानों की व्यवस्था, शौचालय की सुविधा और भी अनेकों कार्य को सुचारु रूप से स्वयंसेवकों का समूह चला रहे थे।
- 25,000 से भी अधिक इतनी बड़ी साधकसंख्या ने दोपहर से ही आश्रम प्रवेश के साथ ही संस्था की ओर से दिए मौनसूत्र को धारण करके पूज्य गुरुदेव को मौन का उपहार दिया। हजारों की संख्या आश्रम में थी पर असीम शांति छाई हुई थी!

कार्यक्रम : आरंभ से समापन तक

- गणमान्य लोगों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।
- पूज्य गुरुमाँ के आगमन के साथ महिलादिन के निमित्त से पूज्य गुरुमाँ के लिए अमेरिका एवं भारत के साधकों ने बनाए भावगीत का विमोचन हुआ।
- पूज्य गुरुमाँ ने अपनी मधुर वाणी से आशीर्वचन देके हुए भारत के सभी आश्रमों को विद्युत के क्षेत्र में स्वनिर्भर बनाने के लिए सभी साधकों में जोश भर दिया।
- चातक नजर से अपने आराध्य की राह में रहे साधकों की आँखों में हर्षाश्रु आ गए जब पूज्य गुरुदेव का मंच पर आगमन हुआ।
- जैसे समय थम सा गया हो ऐसे अद्भुत वातावरण में साधकजन पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी से बह रहे चैतन्य का आकंठ पान कर रहे थे।
- अत्यंत शिस्तबद्ध रूप से इतने हजारों लोगों ने भावपूर्ण तरीके से पादुका नमन के कार्यक्रम में हिस्सा लेकर अपने भीतर के दोषों का समर्पण किया!
- भोजन प्रसाद के साथ-साथ एक और भी भावमय कार्यक्रम सभी की राह देख रहा था, वह था लोकगायक आदित्यजी के द्वारा परोसी गई लोकगीतों की मधुर रसथाल!

प्रकीर्ण :

- इसके साथ-साथ छोटे बच्चों के लिए अलग से व्यवस्था की गई थी।
- पूज्य गुरुदेव द्वारा घोषित आत्मीयता वर्ष – 2024 विषय को लेकर प्रदर्शनी सभी के लिए उपलब्ध की गई थी।
- यह पूरा कार्यक्रम का विषयवस्तु था – पाँच महाभूत का प्रतिनिधित्व; खुला आकाश, आश्रम की गौशाला से मिले गोबर से लेपित भूमि, स्वागत में गुलाबजल का यंत्रों से छिड़काव जो सभी के लिए मनभावन अनुभव था, पूरे पथ पर गोबर के कंडे और औषधियों से युक्त धूप जो वातावरण को अद्भुत बनाने के साथ-साथ अग्नि और वायुतत्त्व को दर्शा रहे थे।

समर्पण आश्रम, दांडी में आयोजित आत्मानंद का यह अवसर कि जहाँ पूज्य गुरुदेव का चैतन्य सतत बह रहा हो, साक्षात् गुरुशक्तियाँ जहाँ सदैव बिराजमान हो, हिमालय के महर्षि परम पूज्य गुरुदेव का एवं महान योगिनी पूज्य गुरुमाँ का प्रत्यक्ष सान्निध्य हो तो भला कौन अध्यात्म के पावन जल से बिना भिगोए, बिना शुद्ध हुए रह सकता है!

महाशिवरात्रि - 2024 के पावन पर्व पर अपनी सुरीली आवाज में गा रहे प्रसिद्ध लोकगीत गायक श्री आदित्य गढ़वीजी

आदित्य गढ़वीजी का युवाओं के लिए कुछ संदेश :

संगीत अध्यात्म की ओर ले जाता है। अध्यात्म, ध्यान और योग आजके तनावपूर्ण वातावरण में अति आवश्यक है। शारीरिक स्वास्थ्य के साथ साथ मानसिक स्वास्थ्य भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। ध्यान, योग और अध्यात्म में मैं बहुत रुचि रखता हूँ। इन विषयों को संगीत के साथ जोड़कर युवाओं को अध्यात्म के मार्ग पर ले जाने का छोटा सा प्रयास कर रहा हूँ।

महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर समर्पण आश्रम दांडी की पावन भूमि पर श्री आदित्य गढ़वीजी का अनुभव कथन :

"संगीत की और अच्छे आवाज की जो भेंट मिली है वह तो ईश्वरीय कृपा है। परंतु इस संगीत का कहाँ सदुपयोग करना वह तो किसी गुरु की कृपा से ही संभव है। मैं मानता हूँ कि पूज्य श्री शिवकृपानंद स्वामीजी की मेरे पर विशेष कृपा है कि इस महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर, दांडी के समर्पण आश्रम की पावन भूमि पर, हजारों की उपस्थिति में मुझे गाने का अवसर मिला, चैतन्य पाने का अवसर मिला, इसके लिए मैं खुद को भाग्यशाली मानता हूँ और पूज्य स्वामीजी की ऐसी कृपा सदैव बनी रहे ऐसी प्रार्थना करता हूँ।"

गुजरात का लोकप्रिय टेलिविजन कार्यक्रम 'लोकगायक गुजरात सिझन - 2' से प्रसिद्ध हुए श्री आदित्य गढ़वीजी ने अपने पिता योगेश गढवीजी की चारणी एवं लोकसाहित्य की धरोहर आज दिन तक गौरवान्वित रूप से संजोई रखी है।

सुंदर प्रतिभाव

Kalindi
from, Germany

इस अनुष्ठान में, मेरा तीसरा अनुष्ठान, मैंने वह करने का साहस किया जिसके बारे में मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह मेरे लिए संभव है: हमारे अद्भूत शिक्षक रामकाका के साथ यज्ञ प्रशिक्षण! गुरु की कृपा के कारण ही हम सभी इन कठिन मंत्रों को सीखने में सक्षम हुए, उसका वास्तव में एक चमत्कार जैसा लगता था, खासकर हम जर्मनभाषियों के लिए! इसके साथ बहुत अधिक आनंद और प्रेम का अनुभव करना! प्रतिदिन, सुबह और दोपहर तक अभ्यास करने से हमारा छोटा समूह, स्विस, ऑस्ट्रियाई और जर्मन साधकों (क्रिस्टीना, एंडी, तपस्या, कबीर, हेनरी, गयानो, सोरया, व्योमिनी) का एक समूह, एक जादुई धागे की तरह खींच रहा था। हमें बस चलते रहना है। हमें अंजली (सिंगापुर), शीतल (ऑस्ट्रेलिया) और यश (न्यूयॉर्क) से भी अद्भूत सहायता मिली। और हम सभी अप्रैल की शुरुआत में यूरोपीय समर्पण केंद्र, जर्मनी में अपने पहले यज्ञ की योजना बनाते हुए आगे बढ़ रहे हैं। धन्यवाद, स्वामीजी-गुरुमाँ और अनुष्ठान 2024 के अविश्वसनीय अनुभव के लिए उपस्थित सभी भावपूर्ण साधकों और स्वयंसेवकों को धन्यवाद! इसे दुनिया में ले जाना खुशी की बात है।

Giovana Aldave
from, Germany

यह मेरा दूसरा अनुष्ठान है जिसमें मैंने जनवरी 2023 से भाग लिया है। पिछले अनुष्ठान के बाद से मेरी आध्यात्मिक प्रगति में काफी सुधार हुआ है। जिन अनुभूतियों का मैंने अनुभव किया है वे इस दुनिया से बाहर की हैं और यह अक्सर वैसे ही घटित होती हैं जैसे यह सामान्य था। मैंने वास्तव में अपने दिल में यह जान लिया है कि यदि गुरुशक्तियाँ कृपालु नहीं होती तो हमारे आध्यात्मिक विकास का कुछ नहीं होता। निःसंदेह, हमें अपना आध्यात्मिक अभ्यास करना होगा, जिसमें 45 दिनों तक पूरे दिन में कई गतिविधियाँ होती हैं जो हमें अधिक दिव्य ऊर्जा प्राप्त करने में ध्यान केंद्रित करने में मदद करती हैं। मैं हिमालय समर्पण को समाज में लाने के लिए श्री शिवकृपानंद स्वामीजी की सदैव आभारी हूँ और मैं इस अनुष्ठान 2024 में इस दुनिया से बाहर निकलने में सक्षम होने के लिए बहुत भाग्यशाली महसूस करती हूँ।

आने वाले महोत्सव में आपकी प्रतीक्षा

नौ दिवसीय गहन ध्यान अनुष्ठान

इस वर्ष चैत्री नवरात्रि के पावन दिनों में गुजरात समर्पण आश्रम, महुडी में हमारे गुरुदेव विश्वचक्र स्थापना हेतु गहन ध्यान अनुष्ठान में जा रहे हैं। उस समय वे सम्पूर्ण एकांत में, देहातीत ध्यान में, समाधि की अवस्था में रहते हैं। ऐसे समय उनसे चित्त से जुड़े सभी साधकों की ध्यान की स्थिति बहुत अच्छी होने की संभावना बढ़ जाती है। ऐसे चैतन्यपूर्ण माहौल में कोई भी आत्मा अपनी आत्मिक उन्नति के लिए आश्रम के अलौकिक वातावरण का लाभ ले सकती है। इस नवरात्रि के कोई भी एक दिन भी तो आश्रम का लाभ लेना ही है।आप आ रहे हैं ना?

पाटोत्सव

सौराष्ट्र समर्पण आश्रम, दिनांक 25 अप्रैल, 2024

अंतर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक रिट्रीट

30 अप्रैल से 2 मई, 2024 इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में

1. हमारे गुरुदेव के वरद हस्तों श्री मंगलमूर्ति को श्री गुरुशक्तिधाम में स्थापित किया जाएगा।
2. परम पूज्य गुरुदेव एवं परम पूज्य गुरुमाँ की साक्षात् उपस्थिति में जीवन परिवर्तनकारी बहुत ही सुंदर कार्यक्रम होंगे।
3. इस दुर्लभ अवसर में विश्व के किसी भी देश से लोग शामिल हो सकते हैं।
4. पंजीकरण हेतु : **https://samarpanmeditationuk.org**